



श्रुतसागर | श्रुतसागर

SHRUTSAGAR (MONTHLY)

Oct-2015, Volume : 02, Issue : 5, Annual Subscription Rs. 150/- Price Per copy Rs. 15/-

EDITOR : Hirenbbhai Kishorbhai Doshi



प. पू. आचार्य भगवंतश्री पद्मसागरसूरीश्वरजी म. सा. के
८९वें जन्मोत्सव पर उपरस्थित श्रमणवृंद

आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर



जन्मदिन प्रसंग पर दीप प्रागट्य
करते हुए महानुभाव

जन्मदिन प्रसंग पर
गुरुपूजन करते हुए महानुभाव



गुरु भगवंत से आशीर्वाद ग्रहण करते
हुए श्री विवेक ओबेरोय

गुरु भगवंत का गुणानुवाद करते हुए
पद्मश्री कुमारपालभाई देसाई



ISSN 2454-3705

आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर का मुखपत्र

श्रुतसागर

श्रुतसागर

SHRUTSAGAR (Monthly)

वर्ष-२, अंक-५, कुल अंक-१७, अक्टूबर-२०१५

Year-2, Issue-5, Total Issue-17, October-2015

वार्षिक सदस्यता शुल्क-रु. १५०/- ❖ Yearly Subscription - Rs. 150/-

अंक शुल्क - रु. १५/- ❖ Issue per Copy Rs. 15/-

आशीर्वाद

राष्ट्रसंत प. पू. आचार्य श्री पद्मसागरसूरीश्वरजी म. सा.

❖ संपादक ❖

❖ सह संपादक ❖

❖ संपादन निर्देशक ❖

हिरेन किशोरभाई दोशी

डॉ. उत्तमसिंह

श्री गजेन्द्रभाई पढियार

एवं

ज्ञानमंदिर परिवार

१५ अक्टूबर, २०१५, वि. सं. २०७१, आसो सुदि-२



प्रकाशक

आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर

श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र कोबा, गांधीनगर-३८२००७

फोन नं. (०७९) २३२७६२०४, २०५, २५२ फेक्स : (०७९) २३२७६२४९

Website : www.kobatirth.org Email : gyanmandir@kobatirth.org

अनुक्रम

१	संपादकीय	डॉ. उत्तमसिंह	३
२	गुरुवाणी	आचार्य बुद्धिसागरसूरिजी	४
३	Beyond Doubt	Acharya Padmasagarsuri	५
४	श्रीबंभणवाहामंडण श्रीमहावीरस्तवन	संजयकुमार झा	७
५	मथुरानो कंकाली टीलो	मुनिराजश्री दर्शनविजयजी	२३
६	समाचार सार	डॉ. हेमन्त कुमार	२९



प्राप्तिस्थान :-

आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर
तीन बंगला, टोलकनगर
परिवार डाईनिंग हॉल की गली में
पालडी, अहमदाबाद - ३८०००७
फोन नं. (०७९) २६५८२३५५

संपादकीय

डॉ. उत्तमसिंह

श्रुतसागर का यह नूतन अंक आपके करकमलों में सादर समर्पित करते हुए अपार आनन्द की अनुभूति हो रही है। इस अंक में गुरुवाणी शीर्षक के तहत आचार्यदेव श्री बुद्धिसागरसूरीश्वरजी म.सा. द्वारा लिखित 'समकितीनी परीक्षा' नामक लेख प्रकाशित किया जा रहा है, जो हमें गुणानुरागी बनने की प्रेरणा देता है। वीतरागीय धर्म की प्राप्ति हेतु गुणानुराग श्रेष्ठतम साधन है और गुणानुरागी ही सम्यक्त्व प्राप्त कर परमात्मा को पा सकता है। द्वितीय लेख राष्ट्रसंत आचार्य भगवंत श्री पद्मसागरसूरीश्वरजी म.सा. कृत पुस्तक 'Beyond Doubt' से क्रमबद्ध श्रेणी के तहत संकलित किया गया है।

अप्रकाशित कृति प्रकाशन के तहत प्रस्तुत अंक में आचार्यश्री सोमविमल-सूरिकृत 'श्रीबंभणवाडामंडन श्रीमहावीरजिन स्तवन' नामक प्राचीन कृति प्रकाशित की जा रही है। इसकी रचना राजस्थान के सिरौही शहर के पास स्थित 'बामणवाडा तीर्थमंडन' चरम तीर्थकर श्री महावीरस्वामी को लक्ष्य में रखकर की गई है। मारूगुर्जर भाषाबद्ध इस कृति का प्रकाशन वि.सं. १६वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में लिपिबद्ध हस्तप्रत के आधार पर किया जा रहा है जो श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र कोबा के ग्रन्थागार में संग्रहीत है।

पुनः प्रकाशित लेख श्रेणी में इस बार मुनिराज श्री दर्शनविजयजी म.सा. द्वारा लिखित व 'जैन सत्यप्रकाश' में प्रकाशित 'मथुरानो कंकाली टीलो' नामक संशोधनात्मक लेख प्रकाशित किया जा रहा है। इस लेख में वर्णित ऐतिहासिक नगरी मथुरा के कंकाली टीले से प्राप्त भगवान महावीर के जीवनप्रसंगों से संबंधित दो महत्त्वपूर्ण घटनाओं विषयक पुरातन प्रस्तरचित्रों व खण्डित शिलालेखों का विशद विवेचन किया गया है जो जैन स्थापत्य, इतिहास और पुरातात्विक साक्ष्यों की दृष्टि से अति महत्त्वपूर्ण है।

समाचारश्रेणी के तहत राष्ट्रसंत आ.भ.श्री पद्मसागरसूरीश्वरजी म.सा. के ८१वें जन्मोत्सव-समारोह 'गुरुपूर्वोत्सव' व 'श्री महुडी तीर्थ श्वे. मू. जैन संघ' में आयोजित कार्यक्रमों आदि विषयक समाचारों का संकलन किया गया है।

आशा है इस अंक में संकलित सामग्री द्वारा हमारे वाचक लाभान्वित होंगे व अपने महत्त्वपूर्ण सुझावों से अवगत कराने की कृपा करेंगे।

ગુરુવાણી

આચાર્ય શ્રી બુદ્ધિસાગરસૂરિજી

સ્વદોષદર્શન અને પરગુણ વર્ણન કરવું ઘણું અઘરું છે. સ્વપ્રલાઘા પરનિંદા અનાયાસ થઈ જતી હોય છે. મોક્ષગમનની ટિકિટ સમા સમકિતની મલીનતાનું કારણ પણ આ જ છે. આ. શ્રી બુદ્ધિસાગરસૂરીશ્વરજી મ. સા. સમકિતીની પરીક્ષા બાબતે જે વાત કરી છે તેમાં પણ ખાસ કરીને આ વાત ઉપર જ ભાર મૂક્યો છે જે અત્રે રજૂ કરીએ છીએ.

સમકિતીની પરીક્ષા

અમુક મનુષ્યમાં સમ્યક્ત્વ છે કે કેમ તેની પરીક્ષા કરવી હોય તો તેનામાં ગુણાનુરાગ છે કે નહિ તેની તપાસ કરવી. આ જગત્ માં કોઈપણ મનુષ્ય મુક્તિ પામશે તે ગુણાનુરાગી થશે ત્યારે પામશે. ગુણાનુરાગ એ વીતરાગના ધર્મને પમાડનાર મોટો ગુણ છે. જેનામાં ગુણાનુરાગ છે તે સમ્યક્ત્વ પામ્યો વા પામશે. ગુણાનુરાગી સત્યની બાજુ તરફ વળે છે અને દોષને દેખે છે તોપણ દોષ તરફ તેનું લક્ષ-ચિત્ત ચોંટતું નથી. જ્યાં ત્યાં ગુણ છે તેજ મારા છે એવી ગુણાનુરાગીની દૃષ્ટિ હોય છે, તેથી તે ગુણ અને ગુણીની પરીક્ષા કરતો કરતો છેવટે સર્વગુણી એવા વીતરાગ દેવનો રાગ ધારણ કરી શકે છે અને વીતરાગનો ભક્ત બને છે. ગુણાનુરાગી માર્ગાનુસારી તો અવશ્ય હોય છે. તેને ગુણનો પક્ષપાત હોય છે. મહાર્ક તે સારું એવો તે આગ્રહ કરતો નથી. પણ જે જે ગુણો છે તે મારા આત્માના છે એવી તેની દૃષ્ટિ હોવાથી ગુણાનુરાગી ગુણની શ્રેણિ પર ચઢે છે અને હળવે હળવે તે ગુણના ઓઘભૂત થાય છે. જેનામાં કોઈપણ જાતનો ગુણ હોય તેને સમકિતી દોષ રૂપે દેખાતો નથી. સમકિતી કોઈના ગુણને અવગુણ રૂપે બોલતો નથી. ગુણાનુરાગી કદી કોઈના દોષને વદતો નથી. ગુણાનુરાગી અમુક મનુષ્ય છે તો સમજવું કે તે હાલ સામાન્ય સ્થિતિમાં છે તો પણ તે અન્તે તે ગુણના યોગે પરમાત્માની પ્રાપ્તિનો અધિકારી બનવાનો એમ અવબોધવું. કૂળથી જન કહેવાતો હોય અને તેનામાં જો ગુણાનુરાગ ન હોય તો તે શ્રીવીર પ્રભુના ગુણોનો રાગી બની શકે નહિ. ગમે તેવો ક્રિયાવાદી કર્મયોગી હોય વા વિદ્વાન્ હોય પરન્તુ જો ગુણાનુરાગી નથી હોતો તો તે અન્ય મનુષ્યના ગુણોને દેખી શકતો નથી, અને ઉલટો અન્યોના ગુણને પણ દોષરૂપે વદીને જનસમાજને નીચ બનાવવા પ્રયત્ન કરે છે અને તેથી પોતે તથા અન્યોને ઉપકારક બની શકતો નથી. ગુણાનુરાગી અને કોઈના ગુણને બોલનાર ખરેખર પરમાત્માને પ્રાપ્ત કરી શકે છે.

Beyond Doubt

Acharya Padmasagarsuri

Only that question can be given a satisfactory reply which has developed after serious contemplation and enquiry, makes some sense, and that which is not baseless. Only that thirst can be quenched which comes right from the heart and that which is internal. One cannot borrow thirst or interest for truth. You may find lot of sources to quench your thirst but you will find none who will provide you with the thirst itself. Similarly there are a number of priests who preach but the interest has to come from within yourself. Based on the nature of the questions shall be the answers.

Professor Mafatlal, Professor of Philosophy, one day while teaching his students, asked them a question which was as follows, "If I travel for Delhi by plane and if the speed of the plane is 300 Km/hr, what will be my age at that time?" All the students were quite bewildered by the question for the question was so silly and vague. In Mathematics there was no formula which could provide the solution for such a silly question. While all the students were discussing the question with each other, one student who was quite witty, naughty and smart stood up and said. "Sir if you do not get angry I shall answer your question". The Professor said he shall be happy to hear the answer, and the boy said that the Professor's age at that time would be Forty four years.

The Professor was quite taken aback by the answer, because the student had answered the question correctly. He

SHRUTSAGAR**6****October-2015**

also asked the formula which the boy had applied to answer the question. The boy refused to reveal the formula because hearing which the Professor would really get angry with him. When the professor coaxed him to tell the formula the boy then said, "Sir, I have an elderbrother who also is in the habit of asking such, silly questions. We consulted many doctors but of no avail. All the reports only declared him to be insane. i.e. half mad. Now his age is twenty two years, hence I arrived at yours to be forty four because the double of twenty two is forty four (2 halves make a full, hence the Professor was full mad).

The aim of giving the above illustration is that if the question is wrong and senseless the answer will also be absurd.

Standing near Lord Mahavira, Indrabhuti thought "It is not at all astonishing that this person knows my name and family lineage because the whole world is aware of all the

facts about me. But if he knows about my doubt and the base of the doubt I shall accept him to be an omniscient and acknowledge his greatness".

As Indrabhuti was seriously contemplating over the issue. Lord Mahavira, quite aware of Indrabhuti's doubt remarked, "I know that you have a doubt, that has been haunting you for years and it is based on the contradictory statements in the Vedas. Your doubt is that whether soul (atman or Jiva) exists or not.

(Countinue...)



श्रीबंभणवाडामंडण श्रीमहावीर स्तवन

संजयकुमार झा

प्रत परिचय-प्रस्तुत कृति का संपादन कार्य आचार्यश्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर, कोबा की एकमात्र हस्तप्रत के आधार से किया गया है। यह प्रत श्री देवद्विगणि क्षमाश्रमण हस्तप्रत भांडागार के क्रमांक-८३६९ पर है। अक्षर सुन्दर व सुवाच्य है। प्रत लेखनोपरान्त छुटे हुए पाठ की पूर्ति एवं अशुद्धियों के परिमार्जन हेतु उपयुक्त स्थलों को योग्य रूप से सुधारा गया है। सुन्दर पार्श्वरेखा, विविध चित्रों के मध्य पलांक, मध्य भाग में लाल वर्तुल बिन्दी सहित कुण्डाकृति, क्वचित् शीर्षस्थ पंक्ति में कलात्मक मालाएँ आदि साज-सज्जाएँ प्रत के सौन्दर्य को आकर्षक बनाती हैं। प्रतिलेखन पुष्पिका में उल्लिखित लेखन काल विक्रम संवत् १६८२ है। पुष्पिकान्तर्गत प्रतिलेखक ने अपना परिचय ॥ पं.श्री श्री श्री २श्रीजयरत्नगणि तत्शिष्य गणि श्री श्री३ श्रीराजरत्नगणि तत्शिष्य भुजिष्य कीर्तिरत्न लखितम् ॥ इस प्रकार दिया है। प्रतिलेखक मुनि कीर्तिरत्न पं. श्रीजयरत्नगणि के प्रशिष्य व श्रीराजरत्नगणि के शिष्य हैं। श्री राजरत्नगणि रचित नवकार रास में गुरुपरम्परा सविस्तृत वर्णित है, जिसमें कृतिकार आचार्य सोमविमलसूरि का गुरु सहित उल्लेख मिलता है। अतः कहा जा सकता है कि कृतिकार की शिष्य परम्परावर्ती विद्वान् मुनि श्री कीर्तिरत्न द्वारा ही यह प्रत लिखी गयी है। प्रतिलेखन पुष्पिका में यद्यपि गच्छ का उल्लेख नहीं है किन्तु, गुरुशिष्यपरम्परा देखने से ये सभी विद्वान् तपागच्छीय होने के कारण प्रतिलेखक को तपागच्छीय मानने में आपत्ति नहीं होनी चाहिये। इस तरह प्रत की महत्ता में और अभिवृद्धि होती है। अब प्रत के भौतिक व लाक्षणिक परिचय की संक्षिप्त झलक अग्रलिखित रूप से देख सकते हैं-

प्रत क्रमांक-०८३६९, प्रतनाम-बंभणवाडा महावीरजिन स्तवन, पूर्णता प्रकार-संपूर्ण, कुल पत्र संख्या-५,

लम्बाई-२४ से.मी., चौड़ाई-१०.५, कुल पंक्तियाँ-१३, पंक्ति में औसतन कुल अक्षर-४४ से ४६, लेखन वर्ष- १६८२, लाक्षणिक चिह्न-फुल्लिका-मध्य-वापी-गोलचंद्र; चित्र-अंक स्थान में-सादा (रेखा चित्र), गेरु लाल रंग

से अंकित विशेष पाठ; पार्श्व रेखा-लाल-काला. लिपि-जैनदेवनागरी. पदार्थ प्रकार-कागज व प्रत की भौतिक स्थिति अच्छी है. यह प्रत कैलास श्रुतसागर ग्रंथसूचि-भाग-२ में सूचिबद्ध है. जैन गूर्जर कविओ नामक संदर्भ ग्रंथ में इस कृति का उल्लेख नहीं है.

कृति परिचय-श्रीमहावीरजिन स्तवन-बंधनवाडामंडन नामक प्रस्तुत कृति है. इसके प्रणेता तपागच्छीय आचार्य श्रीसौभाग्यहर्षसूरि के शिष्यरत्न आचार्य श्री सोमविमलसूरि है. यह कृति प्राचीन गुजराती (मा.गु.)भाषा में गुम्फित है. जबकि रचना के अन्तर्गत अपभ्रंश की झाँकी न्यूनाधिक रूप से दृष्टिगोचर होती है. कुल ७ ढाल एवं १०३ गाथाओं में ग्रथित है. मरुदेश (राजस्थान) के बामणवाडा^१ तीर्थमंडन चरम तीर्थकर श्रीमहावीरस्वामी को लक्ष्य में रखकर यह स्तवन किया गया है. रचना रोचक, बोधप्रद एवं भक्तिप्रद है. कर्ता ने भगवान वर्द्धमान का जीवन चरित्र खूब सुन्दर ढंग से अपनी रचना में सफल रूप से चित्रण करने का प्रयास किया है. मंगलाचरण के रूप में श्रुतदेवता शारदा का स्तवन है. इसके बाद वीर विभु के जीवन से सम्बन्धित घटनाओं का वर्णन किया गया है. विविध रागों में आबद्ध ७ ढालमय यह स्तवन जिनचरणानुरागियों के लिये गेय है तथा एक बार तो अवश्य ही यह पद्यपीयूष पेय है. अंतिम ढाल में बंधनवाडजी तीर्थ का स्थलसंकेत, तीर्थ व तीर्थकर की महिमा, फलश्रुति आदि का सम्यक् गुणगान किया गया है. प्रतिलेखक ने स्तवन की ढाल-१ से ७ को स्वतंत्र होते हुए भी गाथाओं की गणना क्रमशः की है. इससे पाठकों को यह लाभ होगा कि जिस प्रसंग को पढ़ना व जानना चाहें उसे निर्दिष्ट गाथाक्रम पर जाकर शीघ्र ही देख सकते हैं, अर्थात् सरलता से अपेक्षित प्रसंगगाथा तक पहुंच सकते हैं. गाथा-२ से लेकर १०२ में भगवान का चरित्रात्मक स्तवन है एवं गाथा-१०३ जो कलशरूप है, जिसमें रचनाप्रशस्ति है.

भाषा-अपभ्रंश मिश्रित पुरानी गुजराती में यह रचना है. इसमें एक और विशेषता देखी गयी है कि तत्कालीन ग्राम्यभाषा का अंश भी यत्र-तत्र पाया गया है. सम्भव है कि उच्चारण सौकर्य के कारण भी भाषागत मौलिक शब्दों का संक्षेपीकरण व मालालोप हुआ हो, यह भी संभव है कि पद्यात्मक रचना के कारण

१. वर्तमान में यह तीर्थ सिरौही के पास बामणवाडजी नाम से प्रसिद्ध है.

श्रुतसागर

9

अक्तूबर-२०१५

पूर्वपाद के अंतिम शब्दों के साथ तुक मिलाने हेतु किया गया हो, प्रतिलेखक द्वारा भूल से कहीं-कहीं मात्राएँ छुट गयी हों. निश्चित तौर पर कह नहीं सकते कि कारण क्या है? हमें इतना लाभ अवश्य ही मिलता है कि शब्दसंक्षेप या मात्रालोपवाले शब्दों का अतिरिक्त ज्ञान प्राप्त होता है. कुछेक उदाहरण देखें- गाथांक-२ में “रिषभघरिणि नारी देवाणंद” यहाँ पूर्वपाद के अंत में आणंद के साथ तुक मिलाने हेतु देवाणंद योग्य ही है. किन्तु सावधानी रखनी है कि देवाणंद शब्द से पुरुषवाची शब्द का बोध होता है. यहाँ रिषभघरिणि अर्थात् ऋषभदत्त ब्राह्मण की पत्नी देवानंदा अर्थ जानने योग्य है. मात्रालोप से पुलिंग व स्त्रीलिंग में थोड़ी सी दुविधा तो होती है परन्तु प्रसंग से अर्थ स्पष्ट हो जाता है. इसी गाथा में “आसाढ सकल छठि” यहाँ सुकल (शुक्लपक्ष) की जगह सकल के ‘स’ में उकार का मात्रालोप हुआ है. जैसे संस्कृत में एक शब्द के अनेक अर्थ होते हैं. उसी प्रकार देशी भाषाओं में भी एक शब्द के अनेक अर्थ होते हैं. अन्तर इतना है कि संस्कृत शब्द शुद्धप्राय होता है एवं देशी शब्दों में इस प्रकार मात्रालोपवाले शब्द, संक्षिप्त नाम वाले शब्द, ‘श, ष,’ की जगह ‘स’ प्रयुक्त होना, ‘ष’ की जगह ‘ख’ तथा ‘ख’ की जगह क्वचित् ‘ष’ आदि प्रकार के शब्द ग्राह्य होते हैं. दूसरी बात है कि आज जो गुजराती में ‘अने’ का उच्चारण होता है वही पुरानी गुजराती में ‘अनइ’ एवं संक्षिप्त रूप “नि” का भी प्रयोग मिलता है. इस रचना में दोनों के प्रयोग मिलते हैं. देशी भाषाकीय ज्ञान में अभिवृद्धि के लिये भी यह निमित्त बनता है. ऐसे बहुत से उदाहरण मिलते हैं. विद्वान पाठकवर्ग स्वयं पढकर इसका आनन्द उठावें.

रचनाकाल-प्रशस्ति में रचनाकाल का उल्लेख नहीं है. इतनी बात तय है कि प्रत का लेखन संवत् १६८२ है, तो रचना इसके पूर्व की ही होनी चाहिये. इनके द्वारा रचित ‘धम्मिल रास’ में रचना संवत् १५९१ का उल्लेख है, तो अनुमान लगाया जा सकता है कि वि. १६वीं का अन्तकाल या १७वीं का पूर्वार्द्ध काल इस कृति का रचना संवत् होना चाहिये.

कृति प्रणेता परिचय-प्रशस्ति में कर्ता ने अपने नाम के संदर्भ में गाथा-१०३ में इस प्रकार उल्लेख किया है- “तपगच्छ निर्मल हेमविमलसूरि सीसह जगि सुणु, सौभाग्यहरषइं सूरि सीसह श्रीसोमल संधुणिओ ॥१०३॥”

उपर्युक्त पंक्ति से स्पष्ट होता है कि कर्ता तपागच्छीय आचार्य श्री हेमविमलसूरि के प्रशिष्य व आचार्य श्री सौभाग्यहर्षसूरि के शिष्य हैं एवं इनका नाम “सोमल” है. यहाँ प्रश्न उठता है कि सोमविमल शब्द में सोम के बाद (विम) लिखना रह गया या गुरुजनों के द्वारा पुकार नाम किंवा दुलारा नाम सोमल रहा होगा, जिसे कर्ता ने यथावत् रखना उचित समझा. इस प्रकार के उदाहरण तो विद्वानों के अक्सर प्राप्त होते रहते हैं. इतनी बात तय है कि इस स्तवन में जो उक्त दोनों गुरुजनों के नाम लिये गये हैं, उसी प्रकार से आचार्य सोमविमलसूरि रचित अन्य कृतियों में भी पाये जाते हैं. अतः शंकामुक्त होकर सोमल को सोमविमलसूरि स्वीकारने में संशय नहीं होना चाहिये. स्तवनकार आचार्य श्री सोमविमलसूरि अद्भुत प्रतिभा के धनी, अद्वितीय विद्वान, शासन के प्रति समर्पित भाव रखनेवाले जिनशासन के दिवाकर थे, तभी तो मुनि अवस्था से उत्तरोत्तर तपागच्छ के गच्छनायक पद पर आसीन हुए. इनके शिष्य आनंदसोम द्वारा रचित सोमविमलसूरि रास में इनका सविस्तृत वर्णन मिलता है. यह रास पूज्य जिनविजयजी द्वारा संपादित जैन ऐतिहासिक काव्य संचय नामक पुस्तक के पल-१३४ से १४९ में प्रकाशित है. जैन गूर्जर कविओ भाग-२ के पल-२ पर सोमविमलसूरि रास का संदर्भ देकर आचार्य श्री सोमविमलसूरि का परिचय दिया गया है. इनका संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है-

खम्भात में समधर मंत्री के वंशज रूपराज (रूपवंत) के सुपुत्र व माता अमरादे के कुक्षिरत्न थे. जन्म का नाम जसवंत था. संवत् १५७४ में तपागच्छाधिपति आचार्य श्री हेमविमलसूरि के द्वारा आचार्य श्री सौभाग्यहर्षसूरि से दीक्षाग्रहण किया. दीक्षानाम सोमविमल रखा गया. सिरोही (राज.) में आचार्य श्री सौभाग्यहर्षसूरि द्वारा संवत् १५८३ में पंडितपद प्राप्त हुआ. अहमदाबाद संघ के आग्रह से बिजापुर में उपाध्यायपद प्रदान किया गया. संवत् १५९७ आश्विन शुक्ल पंचमी को आचार्यपद से विभूषित हुए. संवत् १६०५ वसंतपंचमी के रोज खम्भात में गच्छनायकपदभार से इन्हें अलंकृत किया गया. संवत् १६३७ के मार्गशीर्ष मास में इनका स्वर्गवास हुआ. अतः इनका सत्तासमय दीक्षा वर्ष १५७४ से १६३७ निश्चित रूप से तय हुआ. इनके द्वारा रचित अग्रलिखित उल्लेखनीय कृतियाँ हैं-

श्रुतसागर

11

अक्तूबर-२०१५

धम्मिल रास- रचना संवत् १५९१, गच्छनायकपट्टावली सज्झाय-तपागच्छीय (र.सं.१६०२), श्रेणिकराजा रास अपर नाम सम्यक्त्वसार रास (र.सं.१६०३), चंपकश्रेष्ठि रास (र.सं.१६२२, अभिनंदनजिन स्तोत्र-सावचूर्णिक कल्पसूत्र-टबार्थ, १० दृष्टांत गीत, दिनमान चौपाई, लोकनालिका-टबार्थ, इसके अतिरिक्त छोटी-बड़ी और भी रचनाएँ हैं।

इनसे सम्बन्धित विस्तृत जानकारी हेतु इनके ही शिष्य आनंदसोम द्वारा रचित सोमविमलसूरि रास तथा इनकी शिष्य परम्परा में उपा. राजरत्न रचित नवकार रास में सविस्तृत वर्णन मिलता है. अन्त में एक ठोस तथा महत्त्वपूर्ण बात तथा गौरव की बात है कि श्रेणिक रास नामक कृति जो इनके हाथों से लिखी गयी है, वह प्रत अपने यहाँ यानि कि कोबा ज्ञानभंडार में प्रत नं.५४१२१ पर उपलब्ध है.

॥ श्रीबंधनवाडामंडण श्रीमहावीर स्तवण ॥

॥१॥ श्रीगुरुभ्यो नमः॥

सरसति शुभमति दिउ मनरंगि, ऊलट अधिकु आणी अंगि ।

गाओ सहुं श्रीवीरजिणंद, हीअडइ आणी अति आणंद ॥१॥

पुप्फोत्थरथी चबीआ सामि, अवतरीआ बंधणकुंडगामि ।

आसाढस(सु)कल छठि अति आणंद, रिषभघरिणि नारी देवाणंद ॥२॥

चऊद सुपन पेखइ तेणइ वारि, हरषी प्रीयनइ कहइ विचारि ।

हुसइ पुत्र तुझ अति गुणवंत, बुद्धिवंत अनइ बहु जसवंत ॥३॥

जाणी इंद्र भगति चित्ति आवि, हरणेगमेषी देव जणावि ।

भख्या(भिक्षा)चरकुलि आव्या सामि, न हुइ जनम जउ खितीयकुंड गामि ॥४॥

सिद्धारथ नरवरनी नारि, त्रिसला कूखि करिउ अवतार ।

आसो वदि तेरसि दिनसार, देविइं कीघउ गर्भाप्र(प)हार ॥५॥

दीठां सुपन सवि मझमराति, पहिलउ गज दीठउ भद्रजाति ।

बीजइ वृषभवर त्रीजइ सीह, चओथ लखमी अकल अबीह ॥६॥

पांचमइ पंचवरण फूलमाल, छठइ देखइ चंद्रविशाल ।
 सातमइ सूरिज तेज रसाल, आठमइ उन्नत धजा चु(वु)साल ॥७॥

नुंमइ पूर्णकलश मन मोहइ, दसमइ पदमसरोवर सोहइ ।
 इग्यारमइ खीरसागर सार, बारमइ देवविमान उदार ॥८॥

तेरमइ रतनेरड अतिऊंचउ, चौदमइ विश्वानर घृत सिंचिउ ।
 चऊदइ गगन थकी ऊतरतां, त्रिसला देखइ मुखि पइसंता ॥९॥

ढाल-१ वीवाहलानु

त्रिसलाराणी जागीआं ए, जई निजपतिने पाय लागीआं ए ।
 चऊद सुपन अनुक्रमइं कह्यां ए, राय सिद्धारथ सवि संग्रह्यां ए ॥१०॥

निजमति अनुसारइं चिंतव ए, पुत्र हुसइ गुणवंत सही हवइ ए ।
 त्रिसला नीद्रा नवि करइं ए, जाणी बीजां सुपन सवि फल हरइ ए ॥११॥

दिनकर ऊगिओ जेतलइं ए, तेइया सुपनपाठक घरि तेतलइ ए ।
 साखविचार जोई करी ए, भाखइ पुत्र हुसइ ऊत्तम चरी ए ॥१२॥

दान देई संतोषीआ ए, सवि सुपनपाठक गया हरखीआ ए ।
 मात ऊपरि जिन धरिअ भगति, नवि हाल्या रह्या इसीअ युगति ॥१३॥

माय जाणइ मज्झ गर्भ गलिउ ए, मन चिंतित मनोरथ नवि फलिउ ए ।
 मायनुं दूख जाणी करी ए, जिन हाल्या आस्या सवि फली ए ॥१४॥

चैत्र सुदि तेरसि प्रसवती ए, त्रिसलाइं जनम्या जिनपती ए ।
 छपन्नकुमरी आवी करी ए, सूत्रकरम गाइं भावइ करी ए ॥१५॥

ढाल-२ अंदोलानुओ

आसन कंपिउं इंद्र, जाणी जनम जिणंद ।
 घंटानाद करइं ए, सुरवृंद संचरइ ए ॥१६॥

पालक विमान रचेइं, नंदीसर आवेई ।
 सुहम सुरपती ए, लेवा जाइ जिनपती ए ॥१७॥

श्रुतसागर

13

अक्तूबर-२०१५

प्रणमि जिनवरमात, पंचरूप विख्यात ।
 करि लेई जिनवरु ए, चालइ पुरंदरू ए ॥१८॥
 आव्या मेरुगिरि शृंगि, जिनपति लेई उछंगि ।
 चुसठि सुरधणी ए, भगति करइ घणी ए ॥१९॥
 निर्मल सलिल भृंगार, लेई अतिहिं उदार ।
 मनसिउं चिंतवइ ए, किम करवुं हवइ ए ॥२०॥
 लघु वहइंनाह जिणसूर, किम सहिसि जलपूर ।
 जिन भाव जाणीओ ए, मेरु कंपावीओ ए ॥२१॥
 धरहरिआ मेरु गिरंद, झलझलीआ सुरवृंद ।
 सायर झलझलइ ए, गिरि सिरि टलटलइ ए ॥२२॥
 फूटी सरोवर पालि, तरूअर हालइ डालि ।
 सुरपति चींतवइ ए, ए स्युं संभवइ ए ॥२३॥
 अवधिइं जोउं जाम, जाणिउं वीरजिन काम ।
 खामइ पय नमी ए, खमुं जिन उपसमी ए ॥२४॥
 वृषभशृंगथी द्वार, ढालइ तिम भृंगार ।
 ओछव अति करइ ए, पुण्य पोतइ भरइ ए ॥२५॥
 मुंक्था जननी पासि, नंदीसर उल्हासी ।
 अट्टाही करइ ए, जिनठामि संचरइ ए ॥२६॥

ढाल-३ ईशानेन्द्र खोलइ लीइ ए-

हवइ सिद्धारथ राजीओ, ओच्छव करइ अपार रे ।
 दान मान दिइ अतिघणां, सुर करइ जय-जयकार रे ॥ आंचली ॥
 धन-धन त्रिसला माडली, धन्न सिद्धारथ तात रे ।
 धन्न-धन्न जिण कुलि अवतर्या, वीरजिणंद विख्यात रे ॥२७॥ धन-धन त्रिसला॥
 धवल मंगल छइं भामिनी, घरि-घरि वन्नरमाल रे ।
 घरि-घरि हुइ रे वद्धा(धा)मणां, दीजइ दान विशाल रे ॥२८॥ धन-धन त्रिसला ॥

SHRUTSAGAR

14

October-2015

अशुचिकर्म सवि टालिउं, दिवस हूआ जब बार रे ।
सजन सहू आरोगीया, करइ तसु नाम विचार रे ॥२९॥ धन-धन त्रिसला ॥

घरि आव्या लागि वाधीआ, राज रद्धि परिवार रे ।
ते भणी नाम जं थापीउं, वर्द्धमानकुमार रे ॥३०॥ धन-धन त्रिसला ॥

सजन सहू ते सही करी, उछव जय-जयकार रे ।
चडत पखइं चंदा परि, वाधइ कुमर उदार रे ॥३१॥ धन-धन त्रिसला ॥

आठ वरस तसु जब हुयां, करइ प्रसंसा इंद्र रे ।
बालपणइ बल आगलु, वर्द्धमान जिनचंद रे ॥३२॥ धन-धन त्रिसला ॥

सुर एक वचन न मानतु, परख्या जोवा काज रे ।
जिन आमलक्रीडा करइ, सुर आवइ तेणि ठामि रे ॥३३॥ धन-धन त्रिसला ॥

राती आंखिइं फूफूतु, कालु अति विकराल रे ।
फणधर ते विष वींटीओ, नाठां बालक ततकाल रे ॥३४॥ धन-धन त्रिसला ॥

वर्द्धमान जई करी, साही वदन बलपूर रे ।
विसहर नाख्युं वेगलु, थई बालक जई ते दूर रे ॥३५॥ धन-धन त्रिसला ॥

ते रमवा आव्यु वली, बोलइ वचन विलास रे ।
वर्द्धमानकुंअर प्रतिइं, जीत्यु तम्हे ततकाल रे ॥३६॥ धन-धन त्रिसला ॥

खंधि चडउ तम्हे माहरइ, तम तोलइ नहीं कोइ रे ।
जिनवर जवि खंधिइं चडि, सात ताड थयु सोइ रे ॥३७॥ धन-धन त्रिसला ॥

देखी कुमर सवे गया, नाठा नयर मझारि रे ।
राय सिद्धारथ वीनव्या, स्वामी वयण अवधारि रे ॥३८॥ धन-धन त्रिसला ॥

वर्द्धमाननइ लेई गयु, मोटओ कोइ पिसाच रे ।
जिन पेखइं ज्ञानइं करी, न गमी सुरपति वाच रे ॥३९॥ धन-धन त्रिसला ॥

अंगूठओ सरि चांपीओ, तव अडवडिओ भूमि अपार रे ।
धूजंतु धरणी पडिओ, सुर करइ जय-जयकार रे ॥४०॥ धन-धन त्रिसला ॥

श्रुतसागर

15

अक्तूबर-२०१५

देव खमावइ वली-वली, सही तुं साचु धीर रे ।
 सुरपति दीधुं साचलुं, नाम तम्हारु महावीर रे ॥४१॥ धन-धन त्रिसला ॥
 करी प्रसंसा अति घणी, देव गयुं देवलोक रे ।
 राय-राणी आणंदीयां, ओछव कीधा लोक रे ॥४२॥ धन-धन त्रिसला ॥

ढाल-४ ऊलालानुं

हवइ सिद्धारथराय, हीअडइ धरइ बहू भाय ।
 कुमरनइ भणवा ए मुंकइ, आचार कसिउं न चूकइ ॥४३॥
 सोना-रूपानी लेखिणि, खडीआ मेल्या ए ततखिणि ।
 फलहल पछेडाए आपइं, जस कीरति जगि व्यापइं ॥४४॥
 हाथी खंधि चडावइ, वाजित्र सयल बजावइ ।
 आवइ पंडित पासि, एहवइ इंद्र उल्हासि ॥४५॥
 ब्राह्मणरूप धरेई, कुतिग असिउं अ करेई ।
 गुरू ठामि वीर बिसारइ, पंडित बोलंतओ वारइ ॥४६॥
 मनना संदेह भाषइ, जिनवर सवि तत्त्व दाखइ ।
 नीपनुं जैन व्याकर्ण, जोयुं जिन संसयहरण ॥४७॥
 सुरपति सरगि सधाव्या, जिनवर सवि वधाव्या ।
 यशोदासिउं मेलिओ वीवाह, परणीलइ धन लाह ॥४८॥
 अनुक्रमि सुख विलसंता, पुत्री हई गुणवंता ।
 जमालिनि ते परणावि, सवई लोकांतिक आवि ॥४९॥
 माता-पिता परलोकि, पुहुता गयां देवलो(कि) ।
 भाई वडानइ ए राज, देई सारइ ए काज ॥५०॥
 दीधुं संवछरी दान, भाई मांगइ ए मान ।
 दोइ वरस घरि रहियो, आरंभ सवि परहरयो ॥५१॥

SHRUTSAGAR

16

October-2015

लेयो सुद्ध आहार, सचित्त सवि परिहार ।
 इणि परि रद्धा दोइ वरस, अनुमति लइ मन हरसि ॥५२॥
 चारित्र ओछव करेई, सुरपति दिव्य मेलेई ।
 शिबिका बिसीअ आवइ, वडवृक्ष हेठलि ठावइ ॥५३॥
 मागशिर दसिमि अंधारी, लेई दीख (दीक्षा) साधारी ।
 तप कीधउ तिहां छट्ट, पारणइ खीर विसट्ट ॥५४॥
 ब्राह्मण बहुल ते लेई, सुर पंच दिव्य करेई ।
 ब्राह्मण पूर मित्र, सुणइ जन लेई चारित्र ॥५५॥
 घरणी जंपइ ए गहिला, तम्हो नवि आव्या ए वहिला ।
 तुझ मित्र दान ज दीधुं, वरस लगइसु इ प्रसिधुं ॥५६॥
 जन्मदरद्री अ तुंह, कां सिर भागु ए मुंह ।
 तुझ नीलज नहीं लाज, जाई सेवी जिनवर आज ॥५७॥
 इणि परि नारीइ ताजिउ, गयु जिनवर कन्हइ लाजिउ ।
 आपओ करी अ पसाय, तुं जगबंधव ताय ॥५८॥
 तुं जलधर परि वूठओ, भाग्य हतू तस तूठओ ।
 जिन मनि करुणा धरेई, देववस्त्र अर्द्ध करेई ॥५९॥
 लेई तूनारा घरि पुहुतु, ते कहइ वली जाए वहि तु ।
 बीजु खंड वली लावि, करीइ अखंड सुभ भावि ॥६०॥
 जिनवर विहार करंता, कंटक रहिउ विलगंता ।
 पूठइं जोउं ए जाम, हीइ विमास ताम ॥६१॥
 कंटक बहु लइए सासन, होसि बहु मत भासन ।
 विप्रइ आविअ लीधउं, तेहनुं कारय सीधउं ॥६२॥

श्रुतसागर

17

अक्तूबर-२०१५

॥ ढाल-५ ॥ दमयंती पाली पलइए ॥ राग-विइराडी ॥

नदी तीरिइं जिन संचरइ, पूठि सामुद्रिक आवइ रे ।

सखी आवनइ भावि, मनि ते एहवुं ए ॥६३॥

राय लक्षणधर कोइ नर, सखी पालु ए जाइ रे ।

सखी जाइ नि नायक नहीं ए केहनुं ए ॥६४॥

तउ पुस्तक कूअडां, लेई जलमाहिं नाखुं रे ।

सखी नाखुं नइ भाषउं, ज्ञान नहीं वली ए ॥६५॥

इणि अवसरि इंद्र आवीआ, सवि संदेह भाजइ रे ।

सखी सांजइ नि बाजइ, गजपति ए नरू ए ॥६६॥

अस्थिकग्रामि पधारिआ, तिहां सूलपाणि जक्ष रे ।

सखी जक्षनि लक्ष, लोक जस ओलगइ ए ॥६७॥

निश प्रतइं मांहि जिन रह्यां, बहु उपसर्ग सहीआ रे ।

सखी सहीआ नइ कहीआ, किम जाइ ते घणा ए ॥६८॥

सुर प्रतिबोधी चालीआ, पुहुता पन्नग ठामि रे ।

सखी ठामि नि नामि, चंडकोसिक तणइ ए ॥६९॥

बहु आसातना ते करइ, भव पूरव देखइ रे ।

सखी देखइ नि भाषइ, त्रिभुवननायकू ए ॥७०॥

ओपसमरस आवीओ, पाय लागी नि खामइ रे ।

सखी खामइ नइ नामइ, सीस वली-वली ए ॥७१॥

संगमइ सुर ओपसर्ग कीआ, वली गोवाले जेह रे ।

सखी जेहनि तेह प्रसिद्ध, जाणइ सहू ए ॥७२॥

इम उपसर्ग अनेक परिइं, श्रीजिनवरइं सहीआ रे ।

सखी सहीआ नि लहीआ, कर्मक्षय इणि परिइ ए ॥७३॥

जंभी गामि रजूवालिका, सखी नदीनि पासइ रे ।

सखी पासि नि मास विशाखइं ऊजली ए ॥७४॥

SHRUTSAGAR

18

October-2015

दसमी दिन ज्ञान ऊपनुं, करइ ओछव देव रे ।
सखी देवनि सेवा, सारइ सुर मली ए ॥७५॥

समोसरण तिहां सुर रचइ, सखी परषद बार रे ।
सखी बारनि सार, दीइ प्रभु देशना ए ॥७६॥

॥ सामीउं ए वीर जिणंद ए ढाल-६ ॥

पावाए नयर प्रसिद्ध, श्रीजिनवर तिहां संचर्या ए ।
याग करइ ए अग्यारइ विप्र, शत चूंआलीस परवर्या ए ॥७७॥

पहिलओ ए श्रीइंद्रभूति, अगनिभूति बीजउ पवर ।
त्रीजु ए श्रीवायभूति, चुथु व्यक्त सुधर्मधर ॥७८॥

पांचमु ए सामि सुधर्म, छठओ मंडित जाणीइ ए ।
सातमु ए मोरीअपूत, अकंपित वली आठमु ए ॥७९॥

नवमु ए अचलअभ्रात, मेतारय दसमु भलु ए ।
अग्यारमु ए श्रीप्रभास, आसपूरण गुण निरमलु ए ॥८०॥

ए सहूए मेली एक ठामि, याग करइ वधि साचवइ ए ।
सुरवरु ए जिनवर पासि, आवतइ एहवुं चिंतवइ ए ॥८१॥

एहवु ए अतिभलु याग, संतोष्या सुर आवीआ ए ।
मुंकी ए गया ते क ठामि, तव चिंतइ ए भावीआ ए ॥८२॥

अह्यसमु ए नहीं को जाण, एह अजाण कहु किहां गया ए ।
को कहि ए वीरजिणंद, केवली पासिं ते गया ए ॥८३॥

तओ धरइ ए अतिघणु गर्व, सर्व जाणइ ते कुण अछइ ए ।
संसय एए हरइ किम, इम कही इंद्रभूति गयु पछइ ए ॥८४॥

पांचसिइं ए आगलि छात्र, बिरदावली बहु बोलता ए ।
पुहुता ए ए कहइ किम, चडीओ मतंगज गाजतओ ए ॥८५॥

श्रुतसागर

19

अक्तूबर-२०१५

पहिलु ए पुहतु जाम, ताम पेख्या श्रीजिनवरू ए ।
 चिंतइ ए हरि हर ब्रह्म, चंद सूर कइ रतिवरू ए ॥८६॥

गाजतओ ए गुहरओ मेह, देह सोवन परि दीपतु ए ।
 देखी ए पइठी संक, रखे मुझ ए जीपतु ए ॥८७॥

जगगरू ए परम दयाल, बोलावइ नामिइं करी ए ।
 जाणइ ए सही मुझ नाम, हवइ हुं जीपसि एहनइं ए ॥८८॥

मनतणु ए संसय जेह, ए कहइ जु माहरु ए ।
 तओ हुं ए पाए लागि, सीस थाउं जिन ताहरु ए ॥८९॥

एतलइ ए श्रीजगनाथ, वेदपद जीव थापीओ ए ।
 तेतलि ए लीधी दीख, गणधरपदवी आपीउं ए ॥९०॥

अनुक्रमिइं एह अग्यार, गणधर पदवी ते वरइ ए ।
 त्रिपदी ए लहीअ सिद्धांत, रचीअ नि संसय हरइ ए ॥९१॥

पुहविइं ए करय विहार, भवीअण जिण पडिबोहता ए ।
 मोहता ए इंद निरिंद, पापतिमर भर मोहता ए ॥९२॥

॥ ढाल-७ निरमालडीनु ॥

केवलमणि नि ओहिनाण वर वैक्री लबधि,
 केता पुहता मुगति सरगि के सव्वडुसीद्धि ।
 चऊद सहस चारित्रधार,
 वली सहिस छत्रीस समणी नि समकीतधार ॥
 श्रावक मुजगीस डओढ लाखनइ,
 सहिस नव नवइ तत्त्वना जाण ।
 सहिस अढार नि लाख त्रणि निरमालडी ए,
 श्रावी(क)नु परिवार मणोरही ए ॥९३॥

अत्थिगामि चउ मासि एक चंपाइ,
 तन्नि वाणिज नि वैशालगामि ।

चउमासा बारमन्नि, राजगृहि नालंद चऊद,
छ मिथ्यलां दोइ, भद्रिक गामि जिन रह्या ए ।
आ लभीइ होइ, एक पणग भूमि रहिया ए,
सावथीइ इक, चउमासु छेहलु जिन रह्या ए ॥
निरमालडी ए पावाइं धरय ववेक ॥१४॥

त्रीस वरस गृहिवासि वसीअ, लीधउ चारित्र ।
बार वरस ओपसर्ग सही, लहिउ नाण पवीत्र ।
त्रीस वरस केवलपणइ, पुहुवि करिउ विहार ।
वरस बहुतरि सयल आय पाली सुविचार ।
काती वदि अमावसिइं ए, वीर लहिउं निरवाण ।
राय अढार पोसह करीए, निरमालडी ।
ए दोइ दिन सुणइ वखाण मणोरही ए ॥१५॥

श्रीगोयम गणधारनइ, ऊपनुं नाण ।
सुरनर किन्नर करइ रंग, धन ते सुविहाण ।
पटोधर जगि जाणीइ ए, श्रीसोहम गणधार ।
वरस सहस एकवीस लागि, जस साखा विस्तार ।
चओबीसमु जिणेसरू ए, कल्याणक दिन जेह,
आराधइं भाविइं करी ए, निरमालडी ।
ए वंछित फल लहइ ए, मणोरही ए ॥१६॥

बंधणवाडा नाम गाम मरूदेश मझारि ।
तिहाँ तु पडिमा अछइ सार, गुणमहिमा विस्तार ।
चोर चरड नि खूंट खरड वली धाडीवाहा,
तुम आसातना जे करइ ए ।
तेहनी एहवु होइ, अहभवि परभवि ते नरू ए ।
निरमालडी ए निश्चइं दोभागी होइ मणोरही ए ॥१७॥

वात पित्त नइ कफ सोफ, राफओ खस खयन,
खास दूठ्ठ कूठ्ठ अनइ ओदर विकार ।
डमरू भमरू जानूओ प्रमेह अढारह,

श्रुतसागर

21

अक्तूबर-२०१५

इणी परि जे रोगहतणी ए, वली अनेरी जाति जपता जाइ दूरि सवे ॥
निरमालडी जिनवर नाम प्रणाम मणोरही ए ॥१८॥

तुं जिन बंधव माय-ताय, तु मित्त सुहंकर,
असरण सरण तुं नाथ मुझ, तु दीन दयापर ।
तुं जगगुरुदेवाधिदेव, तुं मझ सुखकारण,
दुहसागरमांही पडत जीव तेहनि तुं तारण ।
तुझ समु समरथ कोई नहीं ए,
जगमाहिं जओ देव, पामी पाय तुमारडा ए ।
निरमालडी नवी करू बीजी सेव मणोरही ए ॥१९॥

मुहरा मूली मंत्र तंत्र, मंत्रखर अवर,
कांइ आराहुं जु तम्हे, लही सेवा जिनवर ।
शाइणि डाइणि भूत प्रेत, व्यंतर विकराल,
करि केसरि चोरारि मारि, जल जलणहि झाल ।
विसहर विस दूरिइं वलइ ए,
वीर जिणेसर नाम, सेवता सवि उपसमइ ए ।
निरमालडी ए, सीझइ वंछित काम, मणोरही ए ॥१००॥

भवीअण भाव धरीअ जेह, करि पूज त्रिकाल,
तेह घरि वाजइ ति वलतूर, मदल कंसाल ।
हय गय रथ पायक कोडि,
बहुपुत्र कलत्र, पुहवीकेरुं राज तेह ।
पामइ इक छत्त, जग जन मोहन ते नरू ए,
हुइ लील विलास, वीरजिणेसर सेवतां ए ।
निरमालडी पुहचइ वंछित आस मणोरही ए ॥१०१॥

तुझ नाम छि राजरीद्धि, सुखसंपति सार,
मांगिउ आपइ एक मुझ, गुणमहिमा भंडार ।
तुझ पयपंकजतणीअं सेवि, दिओ अति दिन मुझ,
पय प्रणमी नि विनवुं, हुं सेवक तुझ ।
पूरब पुण्य पसाउलि ए, पाम्यउ त्रिभुवननाथ,

SHRUTSAGAR

22

October-2015

मनह मनोरथ पूरणओ ए ।

निरमालडी ए, हवइ हुं हुओ सनाथ मणोरही ए ॥१०२॥

॥ कलश ॥

सिद्धारथ नरवरवंश सुरतरू सार सोहइ कंदलु,

श्रीवीर जिणवर अमृत सुखकर नमित सुरगुण निरमलु ।

तपगच्छ निर्मल हेमविमलसूरि सीसह जगि सुणु,

सौभाग्यहरषइं सूरि सीसह श्रीसोमल संथुणिओ ॥१०३॥

॥ इति श्रीबभणवाडामंडणं श्रीमहावीरस्तवनं संपूर्णम् ॥

॥ पं.श्री श्री श्री २श्रीजयरत्नगणि तत्शिष्य गणि श्री श्री३ श्रीराजरत्नगणि
तत्शिष्य भुजिष्य कीर्त्तिरत्न लखितम् ॥

श्रीरस्तु ॥ शुभं भवतु ॥ परोपकाराय लखितं ॥ संवत् १६८२ वर्षे ॥श्रीः छः॥



क्या आप अपने ज्ञानभंडार को समृद्ध करना चाहते हैं?

आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर, कोबा के पास आगम, प्रकीर्णक, औपदेशिक, आध्यात्मिक, प्रवचन, कथा, स्तवन-स्तुति संग्रह आदि अनेक प्रकार के प्राकृत, संस्कृत, मारुगुर्जर, गुजराती, राजस्थानी, पुरानी हिन्दी आदि भाषाओं में लिखित विभिन्न प्रकाशकों द्वारा प्रकाशित बहोत बड़ा एकस्ट्रा पुस्तकों का संग्रह है जो अन्य ज्ञानभंडारों को भेट में देना है. यदि आप अपने भंडार को समृद्ध करना चाहते हैं तो यथाशीघ्र संपर्क करें. पहले आने वाले आवेदन को प्राथमिकता दी जाएगी.

મથુરાનો કંકાલી ટીલો

અને ભગવાન મહાવીરના જીવનના બે વિશિષ્ટ પ્રસંગો

- મુનિરાજ શ્રી દર્શનવિજયજી

મથુરાના કંકાલીટીલાના યોદ્ધાકામ દરમ્યાન મઠ્ઠી આવેલ જૈન દેરાસર અને મૂર્તિઓના ટુકડાઓ, શિલાલેખો કે શિવાલેખોના ભગ્ન થયેલા અવશેષો, આયાગપટ્ટો અને કોઈ કોઈ પથ્થરો ઉપર યોદ્ધાકામ આવેલાં ચિત્રો કે જે ચિત્રોમાં જૈન માન્યતાનુસારની કોઈના કોઈ ઐતિહાસિક ઘટનાઓનું ચિત્રણ કરવામાં આવ્યું છે તે બધી વસ્તુઓ જૈનશાસ્ત્રોમાં વર્ણવામાં આવેલ કેટલીક બીનાઓને ઐતિહાસિક બાજુ ઉપર ઘણો સારો પ્રકાશ પાડ્યો છે.

જે વિદ્વાનો કેટલીય બીનાઓને ઐતિહાસિક પ્રામાણ્ય આપવામાં અચકાતા હતા તેઓ પણ મથુરામાં મઠ્ઠી આવેલા આ ભગ્નાવશેષોનો બરાબર અભ્યાસ કરવાથી તે બીનાઓને સાચી – ઐતિહાસિક માનતા થયા છે.

પરમાત્મા મહાવીરદેવના જીવનની કેટલીક વિશિષ્ટ ઘટનાઓ એવી છે કે જેનું કેવળ બુદ્ધિબલથી પૃથક્કરણ કરવામાં આવે અથવા તો એ ઘટનાઓના સત્યની કસોટી કેવળ બુદ્ધિ ઉપર જ કરવામાં આવે તો એ ઘટનાઓનો ઉકેલ લાવતા માણસ વિમાસણમાં પડી જાય ! આવી ઘટનાઓનો ઉકેલ બુદ્ધિની સાથે સાથે શાસ્ત્રીય-શ્રદ્ધાનો મોટો આધાર લેવામાં આવે તો જ થઈ શકે! અસ્તુ.

બે વિશિષ્ટ ઘટનાઓ –

ભગવાન મહાવીરદેવના જીવનની એવી વિશિષ્ટ ઘટનાઓમાં આ બે ઘટનાઓનો પણ સમાવેશ થાય છે : ૧. ગર્ભાપહરણ (ભગવાન મહાવીર સ્વામીનું ગર્ભાવસ્થામાં એક માતાના ઉદરમાંથી બીજી માતાના ઉદરમાં પરિવર્તન થવા)ની ઘટના અને ૨ બાલ્યકાળમાં આમલક્રીડા વચ્ચે દેવને પરાસ્ત કરવાની ઘટના.

જૈન આગમોમાં આ બંને ઘટનાઓ સંબંધી ઉલ્લેખ મળે છે અને મથુરામાંથી મળેલા ચિત્રોમાં પણ આ ઘટનાઓનાં ચિત્રો મળતાં હોવાથી એ ચિત્રોની સાથે જૈનશાસ્ત્રોમાં વર્ણિત ઉલ્લેખોનો સમન્વય બતાવવાનો પ્રસ્તુત લેખનો આશય છે.

SHRUTSAGAR

24

October-2015

एटले ए चित्तो संबंधी विचार कर्या पहलेलां आपणे जैन आगमोमां ए घटनाओनो उल्लेख तपासीए.

जैनशास्त्रो मुख्य रीते १. मूळ आगम, २. निर्युक्ति, ३. भाष्य, ४. टीका अने ५. चूर्णि; आ पांच भागोमां वहेंचायेलां छे. अने एमांना केटलांकमां परमात्मा महावीरदेवना जीवन-वृत्तान्तनो उल्लेख मळी आवे छे. खास करीने आचारांग सूत्र, सूत्रकृतांग सूत्र, व्याख्याप्रज्ञप्ति (भगवतीसूत्र), कल्पसूत्र, अने आवश्यक निर्युक्तिमां ए संबंधी सविशेष वर्णन मळे छे.

आगम-वर्णित गर्भापहरणनी घटना :

भगवान महावीरस्वामीना जीवनना ६ विशिष्ट प्रसंगोमांनो बीजो प्रसंग गर्भापहरणनो छे. एनुं सविस्तर वर्णन श्री आचारांगसूत्रना भावना अध्ययनमां नीचे प्रमाणे आपेल छे :-

समणे भगवं महावीर इमाए ओसप्पिणीए सुसमसुसमाए समाए वीइकन्ताए, सुसमाए समाए वीइकन्ताए, सुसमदुस्समाए वीइकन्ताए, दुस्समसुसमाए बहु वीइकंताए पन्नहत्तरीय वासेहिं मासेहिं य अद्धनवमेहिं सेसेहिं जे से गिम्हाणं चउत्थे मासे अट्टमे पक्खे आसाढसुद्धे तस्स णं आसाढसुद्धस्स छट्ठी पक्खेणं हत्थुत्तराहिं नक्खत्तेणं जोगमुवागएणं... वद्धमाणाओ विमाणाओ वीसं सोगरोवमाइं आयुयं पालइत्ता आउक्खएणं, ठिइक्खएणं, भावक्खएणं चुए, चइत्ता इह खलु जम्बुदीवेणं दीवे भारहे वासे दाहिणइभरहे दाहिण-माहण-कुण्डपुरसन्निवेसमि उअभदत्तस्स माहणस्स कोडालसगोत्तस्स देवानंदाए माहणीए जालंधरस्स गुत्ताए सीहुअभवभूएणं अप्पाणेणं कुच्छिसिं गअं वक्कन्ते ।

...तओणं समणे भगवं महावीरे हिआणुकप्पएणं देवेणं जीयमेयं तिकट्टु जे से वासाणं तच्चे मासे पंचमे पक्खे आसोयबहुले तस्सणं आसोयबहुलस्स तेरसीपक्खेणं हत्थुत्तराहिं नक्खत्तेणं जोगमुवागएणं बासीहिं राइंदिएहिं वइकंतेहिं तेसीइमस्स राइंदियस्स परियाए वट्टमाणे दाहिण-माहण-कुण्डपुरसन्निवेसाओ उत्तर-खत्तिय-कुण्डपुरसन्निवेसमि नायाणं खत्तियाणं सिद्धत्थस्स खत्तियस्स कासवगुत्तस्स तिसलाए खत्तियाणीए वासिट्टुगुत्ताए कुच्छिसिं गअं साहरइ । जे विय से तिसलाए खत्तियाणीए कुच्छिसिं गअं तं पिय... देवानंदाए कुच्छिसिं

શ્રુતસાગર

25

અક્તૂબર-૨૦૧૫

ગબ્મં સાહરહ | - સૂત્ર (૧૭૬)

અર્થાત્ - “શ્રમણ ભગવાન મહાવીરસ્વામી આ અવસર્પિણી, કાઠમાં સુષમાસુષમા (પહેલો આરો) વીતી ગયે છતે, સુષમા (બીજો આરો) વીતી ગયે છતે, સુષમાદુષમા (ત્રીજો આરો) વીતી ગયે છતે અને દુષમસુષમા (ચોથા આરા) નો ઘણો કાઠ વ્યતીત થઈ ગયા પછી તેના ૭૫ વર્ષ અને સાઢા આઠ મહિના બાકી રહ્યા ત્યારે તે સમયે ગ્રીષ્મઋતુના ચોથા મહિનામાં, આઠમા પક્ષવાહિયામાં આષાઢ સુદી છઠના દિવસે (રાત્રિના સમયે), ઉત્તરફાલ્ગુની નક્ષત્રમાં,વર્ધમાન નામના વિમાનમાંથી, વીસ સાગરોપમનું આયુષ્ય ભોગવીને એ આયુષ્ય, સ્થિતિ અને ભાવનો ક્ષય થવાથી ચ્યવ્યા, ચ્યવીને આ જંબૂદ્વીપના ભરતક્ષેત્રનાં દક્ષિણાર્ધ ભરતમાં દક્ષિણના બ્રાહ્મણકુંડનગરની^૧ પાસે કોડાલ ગોત્રવાળા ઋષભદત્ત બ્રાહ્મણની જાલંધર ગોત્રવાળી પત્ની દેવાનંદા બ્રાહ્મણીના ઉદરમાં ગર્ભરૂપે આવ્યા.”.....

ત્યારપછી શ્રમણ ભગવાન મહાવીરની હાર્દિક ભક્તિ કરવાવાળા દેવે, મારો આ પરંપરાગત આચાર છે, એમ વિચારીને વર્ષાઋતુના લીજા મહિનામાં, પાંચમા પક્ષવાહીયામાં આશોવદી તેરશને દિવસે ઉત્તરાફાલ્ગુની નક્ષત્રમાં, ૮૨ રાત્રિદિવસ પછી ૮૩ મા રાત્રિદિવસના સમયમાં દક્ષિણના બ્રાહ્મણકુંડપુરના સન્નિવેશમાંથી લઈને ઉત્તરના ક્ષત્રિયકુંડપુર^૨ સન્નિવેશમાં જ્ઞાતક્ષત્રિય, કાશ્યપગોત્રીય સિદ્ધાર્થ નામના ક્ષત્રિયની વશિષ્ઠગોત્રવાળી ત્રિશલા નામની પત્નીના ઉદરમાં ગર્ભ મૂક્યો. અને ત્રિશલા ક્ષત્રિયાણીના ઉદરમાંના ગર્ભને..... દેવાનંદાની કુક્ષિમાં મૂક્યો. (આ ગર્ભ પુત્રીનો હતો).

૧. આ સ્થાન બિહાર અને ઓરીસા પ્રાંતમાં મુંગેર જીલ્લામાં સિકંદરાની પાસે લછવાડાથી બે માઈલ પશ્ચિમે છે. એ ગામને અત્યારે “માહાણા” કહે છે. અહીં બ્રાહ્મણોની વસતી મોટા પ્રમાણમાં છે.

૨. મુંગેર જીલ્લામાં સિકંદરાથી બે માઈલ દક્ષિણમાં (લીછવી રાજાઓની પ્રાચીન રાજધાની) લછવાડા ગામ છે. ત્યાંથી પહાડી માર્ગથી છ માઈલ દક્ષિણમાં પર્વત ઉપર “જન્મસ્થાન” ધૂમિ છે. જેનું પ્રાચીન નામ કુંડપુર હતું. પહાડ ઉપર ચઢવાના રસ્તાનું નામ કુંડઘાટ છે. કુંડઘાટના પાસેના જ પ્રદેશોમાં ક્ષત્રિયકુંડ સન્નિવેશના પ્રાચીન યંદેરો પડ્યા છે. આશ્ચર્યની વાત છે કે ત્યાં પહાડી પ્રદેશ હોવા છતાં ઝાઢી-વૃક્ષો અને પાણી સૂબ છે. એક બાંધેલો પાકો કુવો છે. અહીંની ઈંટો નાલંદાની ઈંટોથી મોટી છે. જન્મસ્થાનનો પહાડી પ્રદેશ અત્યારે પણ ઝાઝાપરચંદાના રાજા ચંદ્રમૌલિના અધિકારમાં છે. આ રાજાનું માનવું છે કે તેઓ નંદીવર્ધન (ભગવાન મહાવીરના ભાઈ)ના વંશ જ છે.

શ્રી કલ્પસૂત્રમાં પળ થોડા ઘળા ફેરફાર સાથે આ જ પાઠ મલ્લે છે. આવશ્યક નિર્યુક્તિમાં આ ઘટનાનો ઉલ્લેખ કવિતાબદ્ધ આપ્યો છે, જે ૪૫૦, ૪૫૭ અને ૪૫૮મી ઘાથામાં મલ્લે છે. વ્યાખ્યાપ્રજ્ઞપ્તિ (ભગવતીસૂત્ર) માં ઘર્માપહરણના પ્રસંગનો ઉલ્લેખ માલ્લ મલ્લે છે.

આમલકી-ક્રીડાની ઘટના :

આમલકીક્રીડાની વાર્તા બહુ લાંબી છે. પરન્તુ આઘામોમાં ંનો ઉલ્લેખ સંક્ષેપથી જ મલ્લે છે. કલ્પસૂત્રની કલ્પકિરણાવલી^૧ નામક ટીકામાં ંનું વિશેષ વર્ણન આપેલું છે. ં ઘટના સંક્ષેપમાં આ પ્રમાણે છે :

વર્ધમાન કુમારની ઉમર સાઢાસાત વર્ષની થઈ ત્યારે ંક વખત તેઓ શહેરના છોકરાઓ સાથે આમલકી (આંબલી પીંપળીની) ક્રીડા કરી રહ્યા હતા. આ વખતે ંદ્રે કરેલી ભગવાનના બલ્લ અને નિર્ભીકતાની પ્રશંસા સાંભળીને તેની પરીક્ષા કરવાના ઉદ્દેશથી ંક દેવ ત્યાં આવી પહોંચે છે અને રમત કરતાં છોકરાઓને બીવરાવવા માટે મોટા સર્પનું રૂપ ધારણ કરી જ્ઞાઢની આસપાસ વીંટાઈ જાય છે. સર્પને જોઢને બધા બાલ્લકો આમતેમ ઢોઢી જાય છે. પરન્તુ વર્ધમાન કુમાર જરા પળ ઢર્યા વઘર સર્પને હાથથી પકઢીને ઢૂર ફેંકી દે છે.

છોકરાઓ ફરીને ભેઘા થઈને રમવાનું શરુ કરે છે. તે દેવ પળ બાલ્લકનું રૂપ લઢને તેઓની સાથે રમવા લાઘે છે. રમતની શરત ં કરવામાં આવે છે કે જે બાલ્લક હારે તે જીતનાર છોકરાને પોતાના સંભા ઉપર બેસાઢે. થોઢી જ વારમાં બાલ્લક બનેલ તે દેવ વર્ધમાન કુમારથી પોતાની હાર કબુલ કરે છે અને તેમને પોતાના સંભા ઉપર બેસાઢે છે. તરત જ તે દેવ, વર્ધમાન કુમારને બીવરાવવા માટે, સાતતાઢ જેવઢું રૂપ ધારણ કરે છે. પરન્તુ આ વખતે પળ વર્ધમાન કુમાર લેશ પળ ઢર્યા વઘર પોતાની મુઢ્ઢીના પ્રહારથી તે દેવનું અભિમાન તોઢી નાંસે છે.

વર્ધમાન કુમારનું આ બલ્લ જોઈ દેવને સ્વાત્તી થાય છે, તે માફી માઘે છે અને ત્યારથી તેમને વીરનું નામ આપવામાં આવે છે.

૧. કલ્પસૂત્રની આ ટીકાના કર્તા મહોપાધ્યાય ઢર્મસાઘર ઘણી છે. કલ્પસૂત્ર ઉપર બીજી પળ અનેક ટીકાઓ છે.

શ્રુતસાગર

27

અક્તૂબર-૨૦૧૫

મથુરામાં મઠ્ઠેલ પત્થર ઉપર ઁહોદેલાં ચિત્રો :

જૈનશાસ્ત્રો પ્રમાણે આપણે ઉપરના બન્ને પ્રસંગોનું વર્ણન જોયું. આ ઘટનાઓ સત્ય હોવાની શ્રદ્ધા આજથી બે હજાર વર્ષ પહેલાંના લોકોના હૃદયમાં સચોટ રીતે હતી જેની સાક્ષી બે હજાર વર્ષથી પણ પહેલાંના કાઠમાં પત્થર ઉપર કોતરેલ એ ઘટનાઓનાં ચિત્ર ઉપરથી મઠ્ઠે છે.

આવા પત્થર ઁહોદેલા, કેટલાય જૈન ઐતિહાસિક કથાઓના પ્રસંગો મથુરાના કંકાલીટીલાના ઁહોદકામમાંથી મઠ્ઠી આવ્યા છે. ઁમાં આ બે ઘટનાઓનાં ચિત્રોનો પણ સમાવેશ થાય છે.

પ્રાચીન કાઠમાં મથુરા એ ઉત્તરાપથની એક વિરાટ જૈનપુરી હતી, જે સંબંધી વિસ્તૃત ઐતિહાસિક ઉલ્લેખ પ્રાકૃત તીર્થકલ્પમાં મઠ્ઠે છે. આ નગરમાં ૫૦૦ જિન મંદિરો હતાં. અહીં ચૌરાશી નામનું એક જિનમંદિર હતું. ચૌરાશી આગમોની વાચના આ જ નગરમાં થઈ હતી. અહીં જૈનોની બહુ મોટી વસતી હતી.

મુસલમાનોના શાસનકાઠમાં આ નગરીનું પતન થયું. ક્રમે કરી જિનમંદિરો ઁશુશાયી થઈ ગયાં અને જમીનમાં ઢટાઈ ગયાં. આજે મથુરામાં અનેક ટેકરાઓ નજરે પડે છે. કંકાલીટીલો પણ ઁમાંનો એક છે અને ઁમાંથી ઘણું જૈન સ્થાપત્ય મઠ્ઠી આવ્યું છે.

આ બંધી વસ્તુઓમાંની કેટલીક લખનૌના કેસર બાગમાં છે અને કેટલીક મથુરાના મ્યુઝયમમાં છે. આ બન્ને પ્રસંગનાં ચિત્રોવાઠા પત્થરો પણ ત્યાંથી મઠ્ઠી આવ્યા છે.

ગર્ભાપહરણનું ચિત્ર :

ઁમાંનો ગર્ભાપહરણના ચિત્રવાઠો પત્થર લખનૌમાં છે જ્યારે આમલકી ક્રીઢાના પ્રસંગનું ચિત્ર મથુરામાં છે. ગર્ભાપહરણના ચિત્રની લંબાઈ લગભગ ૨.૧/૨X૧.૧/૨ ફુટની છે. એ પત્થરનો જમણી બાજુનો ઘોઢો ઁાગ ઢુટી ગયો છે. આ ચિત્રમાં નૈગમેષી (હરિણીગમેષી) ઢેવનું ચિત્ર આપેલું છે. તેનું મોઢું ઉંચું અને હરણના જેવું બતાવ્યું છે. બન્ને હાથ મેઠવીને ઁમાં ઁગવાનને ઢારણ કરેલ છે. પાસે જ ત્રિશલારાણી સૂતેલાં છે. પંઁહો નાખનારી ઢાસીને પણ નિઢ્રાઢીન સ્થિતિમાં બતાવેલ છે. ચિત્ર બહુ જ સ્પષ્ટ રીતે ઁહોઢાયેલું છે. આનો નંબર J-ૢ૨ૢ છે.

आमलकी-क्रीडानुं चित्र :

मथुरामां आमलकी क्रीडानां लण चित्तो छे (नंबर १०४६, E-१४ तथा १११५). तेमांथी पहेला चित्रमां एक पहेलवान जेवी प्रचंड कायावाळो अने मेषना जेवा मुखवाळो पिशाच-देव उभेल बताव्यो छे. जमणा हाथमां तेणे बे बाळकोने उठावेला छे. डाबा खंभा उपर वर्धमान कुमारने बेसारेल छे अने जमणा खंभा उपर बीजा छोरराने उठावेल छे. प्रथम दर्शने अमे आ चित्रनो आशय न समजी शक्या परन्तु त्यांना क्युरेटर महाशये ए चित्र जैन होवानुं आग्रह पूर्वक जणाव्युं त्यारे अमे एनो आशय समजी शक्या.

बीजा चित्रमां पण उभो अने मेषमुखवाळो पिशाच आपेल छे. तेमां तेणे डाबा खंभा उपर वर्धमान कुमार अने जमणा उपर बीजा छोरराने उपाडेल छे.

लीजुं चित्र लगभग पहेला चित्रना जेवुं ज छे.

बे हजार वर्ष करतां पण अधिक पुरातन अने मथुरामांथी मळी आवेल, भगवान महावीरना गर्भापहरणना अने आमलकी-क्रीडाने लगतां आ बे चित्रो अने बीजा शिलालेखो उपरथी एम मानवुं ज पडे छे के ते काळमां लोको आ घटनाओने अवश्य मानता हता.

पुरातत्त्वना ऊंडा अभ्यासीओ आ विषय उपर योग्य विचार करे अने आ संबंधी विशेष प्रकाश पाडे तो अवश्य लोकोने घणुं जाणवानुं मळे अने जैनशास्त्रोमां वर्णित वस्तुओ ऐतिहासिक पुरावाओ पूर्वक सिद्ध करी शकाय.

आजे आपणे मथुराने अने जैन इतिहासनी दृष्टिए एना महत्त्वने भूली गया छीए, पण इतिहास-प्रधान आ युगमां ए पालवे एम नथी. आपणे आपणा भूतकाळना गौरवसमी ए नगरीनी योग्य शोधखोळ माटे तत्पर थईए, तेना माटे सर्व प्रयत्न करीए अने ए माटी नीचे दटाएला जैन गौरवने जगत आगळ रजु करीए ए ज भावना!

(जैन सत्यप्रकाश वर्ष-२, अंक-४-५ मांथी साभार)



परम पूज्य राष्ट्रसन्त आचार्य श्री पद्मसागरसूरिजी का ८१वां जन्मोत्सव सोल्लास सम्पन्न

डॉ. हेमन्त कुमार

श्री सेटेलाइट श्वेताम्बर मूर्तिपूजक जैन संघ, अहमदाबाद के तत्त्वावधान में परम पूज्य राष्ट्रसंत आचार्यदेव श्री पद्मसागरसूरिश्वरजी महाराज साहब का ८१वां जन्महोत्सव के उपलक्ष्य में त्रीदिवसीय कार्यक्रम के अन्तर्गत भव्य गुरुपूर्वोत्सव दिनांक २५ सितम्बर से २७ सितम्बर, २०१५ तक हर्षोल्लास पूर्वक मनाया गया।

भाद्रपद शुक्ल १४ तदनुसार दिनांक २७ सितम्बर, १५ को गुजरात विश्वविद्यालय के सभा भवन में मुख्य कार्यक्रम का आयोजन किया गया था। इस मंगलमय अवसर पर देशभर से पधारें गुरुभक्तों ने पूज्य राष्ट्रसन्त आचार्य श्री पद्मसागरसूरिश्वरजी म. सा. का जन्मोत्सव मनाया। पूज्य आचार्यश्री का आशीर्वाद प्राप्त करने तथा उनका अभिवादन करने हेतु उनके अनेक शिष्य-प्रशिष्यगण तथा श्रमणीवृन्द उपस्थित थे।

आचार्य श्री देवेन्द्रसागरसूरिजी म. सा, आचार्य श्री विमलसागरसूरिजी म. सा, गणिवर्य श्री प्रशांतसागरजी म. सा. आदि ने अपने प्रवचनों में जन्मोत्सव एवं पूज्यश्री के जीवन कवन के महत्त्वपूर्ण पहलुओं पर प्रकाश डाला। पूज्य आचार्यश्रीजी ने संसार के परिभ्रमण से छुटकारा प्राप्ति हेतु परमात्मा श्री महावीर के बताए उपदेशों का पालन करना होगा, तभी हम अपना मानवजीवन सफल कर सकते हैं। पूज्य महात्माओं की पवित्र वाणी से संपूर्ण वातावरण धर्ममय बना रहा।

इस परम पावन अवसर पर अनेक श्रीमानों-विद्वानों की उपस्थिति से भव्य गुरुपूर्वोत्सव देदीप्यमान हुआ। पूज्यश्री का आशीर्वाद ग्रहण करने हेतु विशेषरूप से पधारें सुप्रीम कोर्ट के जस्टिस, गुजरात हाइकोर्ट के जस्टिस, शोथश्री आणंदजी कल्याणजी पेढी के प्रमुख माननीय श्री संवेगभाई शोथ, साहित्य क्षेत्र के पद्मश्री अवोर्ड से विभूषित डॉ. कुमारपाल देसाई, अनेक जैन संघों के प्रमुख कार्यकर्ता, व्यापार क्षेत्र से श्री धीरुभाई अंबाणी के बड़े भाई श्री रमणीकभाई अंबाणी, राजनीतिक क्षेत्र से प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदीजी के ज्येष्ठबंधु श्री सोमाभाई मोदी, गुजरात के पूर्व गृहमंत्री श्री प्रफुल्लभाई पटेल, स्थानीय विधायक, भाजपा प्रमुख, सीने जगत के नायक श्री विवेक ऑबेरॉय,

‘तारक महैता का उल्टा चरमा’ की टीम से श्री भव्य गांधी (टपु), सुंदर मामा, ‘महाभारत’ धारावाहिक में दुर्योधन की भूमिका निभाने वाले श्री अर्पित रांका आदि की उपस्थिति से जन्मोत्सव की भव्यता बढ़ी.

भव्य गुरुपूर्वोत्सव का शुभारंभ मंगलदीप प्रगाट्य से हुआ. दो कन्याओं ने अभिवादन नृत्य प्रस्तुत कर पूज्यश्रीजी के प्रति अपनी भावनाएँ प्रकट कीं तो प्रसिद्ध गायक राजीव विजयवर्गीय ने भक्तिपूर्ण गीतों द्वारा संपूर्ण वातावरण को भक्तिमय बना दिया. उपस्थित अनेक महानुभवों ने भी पूज्यश्रीजी के प्रति अपनी मंगल भावनाएँ प्रकट कीं.

प्रवचन श्रृंखला के मध्य उपस्थित महानुभवों का अभिनन्दन किया गया. पूज्यश्रीजी के जन्मोत्सव के पावन अवसर पर अनेक श्रीसंघों एवं श्रीमानों द्वारा जीवदया, जैन मंदिर जीर्णोद्धार और श्रुत संपदा के संरक्षण के क्षेत्र में अग्रणी आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर, कोबा के विकास एवं संचालन हेतु विशाल धनराशि दान में दी गई.

भव्य गुरुपूर्वोत्सव के अंत में सभी पधारे हुए महानुभवों के लिए श्रीसंघ द्वारा साधर्मिकभक्ति की सुन्दर व्यवस्था की गई थी. सभी कार्यक्रम बड़े ही उत्साहपूर्वक संपूर्ण धार्मिक वातावरण में सम्पन्न हुआ.

सेटेलाइट श्वे. मू. पू. जैन संघ में धार्मिक अनुष्ठानों का सिलसिला जारी

परम पूज्य राष्ट्रसन्त आचार्यदेव श्री पद्मसागरसूरीश्वरजी महाराज साहब अपने शिष्य-प्रशिष्यों के साथ चातुर्मास हेतु श्री सेटेलाइट श्वेतांबर मूर्तिपूजक जैन संघ, अहमदाबाद में बिराजमान हैं. उनके चातुर्मास प्रवेश के दिन से ही मंगलप्रवचन, पूजन-विधान आदि का कार्यक्रम प्रारंभ हो गया है.

प्रत्येक रविवार को विभिन्न विषयों पर प्रवचन श्रृंखला का आयोजन किया गया. इस अवधि अनेक तीर्थंकरों के जन्म, तप, दीक्षा, निर्वाण कल्याणक आदि के अवसर पर विभिन्न पूजन- व्रत-उपवास आदि का आयोजन हुआ. श्री सीमंधरस्वामी वीसविहरमानजिन के जन्म कल्याणक, श्री गौतमस्वामी अनुष्ठान, माँ सरस्वती अनुष्ठान, श्रुतज्ञान तप आदि अनेक धार्मिक कार्यक्रमों से संपूर्ण वातावरण धर्ममय बना हुआ है.

श्रुतसागर

31

अक्तूबर-२०१५

परम पूज्य आचार्यश्रीजी ने पर्वाधिराज पर्युषणपर्व में अष्टाहिका प्रवचन, कल्पसूल का वाचन एवं प्रवचन बहुत ही सरल व मधुर शैली में दिया। काफी संख्या में श्रावक-श्राविकाएँ उपस्थित होकर प्रवचन का लाभ लिया।

पूज्यश्रीजी के मंगलआशीष से मासक्षमण, श्रेणितप, सिद्धितप, १६ उपवास, ११ उपवास, ९ उपवास, अट्टाईतप, क्षीरसमुद्रतप आदि विविध तपों के मांडवों की रचना हुई। इस प्रकार अनेक धार्मिक अनुष्ठानों, आयोजनों का सिलसिला चल रहा है और श्री सेटेलाइट श्वेताम्बर मूर्तिपूजक जैन संघ अपूर्व भक्ति का लाभ ले रहा है। पूर्ण धार्मिक वातावरण में चातुर्मास व्यतीत हो रहा है।

कैलास श्रुतसागर ग्रंथसूची खंड-१८ का विमोचन सम्पन्न

परम पूज्य राष्ट्रसन्त आचार्य श्री पद्मसागरसूरीश्वरजी महाराज साहब की पावन प्रेरणा से श्रुत संरक्षण एवं संवर्द्धन का अद्वितीय कार्य किया जा रहा है। पूज्यश्री ने देश भर में लगभग एक लाख तीस हजार किलोमीटर की पदयात्रा के मध्य जहाँ कहीं भी श्रुत संपदा की दुर्गति देखी, श्रुतसाहित्य का उपयोग नहीं हो रहा हो वैसी स्थिति देखी, वहाँ के समाज को अपने पूर्वजों से प्राप्त अमूल्य धरोहररूप श्रुतज्ञानविरासत को संरक्षित करने हेतु प्रेरित किया तथा उस साहित्य भंडार को कोबा स्थित आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर हेतु भेंट में प्राप्त कर यहाँ संगृहीत करवाया।

संगृहीत प्राचीन व दुर्लभ हस्तप्रतों की ग्रंथसूची निर्माण का कार्य संस्था द्वारा किया जा रहा है। ग्रंथसूची लगभग ५० से ज्यादा भागों में प्रकाशित करने की योजना है। ग्रंथसूची प्रकाशित करने की शृंखला में अबतक कुल १७ भाग प्रकाशित हो चुके हैं। इसी शृंखला की एक कड़ी रूप १८वाँ भाग दिनांक २७ सितम्बर, २०१५ को पूज्य राष्ट्रसन्त आचार्यश्रीजी के ८१वें जन्मोत्सव के पावन अवसर पर श्री आणंदजी कल्याणजी पेढी के प्रमुख श्री संवेगभाई लालभाई के कर कमलों से विमोचन किया गया।

इस अवसर पर आचार्य श्री भद्रगुप्तसूरिजी द्वारा धर्मबिन्दु प्रकरण ग्रंथ पर लिखित 'धम्मं सरणं पवज्जामि' पुस्तक का भी विमोचन किया गया, जो तीन भागों में प्रकाशित किया गया है। इन दोनों ग्रंथों का प्रकाशन परम पूज्य राष्ट्रसन्त आचार्य श्रीमद् पद्मसागरसूरीश्वरजी महाराज साहब की प्रेरणा से

SHRUTSAGAR

32

October-2015

संस्थापित आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमन्दिर, श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र, कोबा, गांधीनगर द्वारा प्रकाशित किया गया है.

**योगनिष्ठ आचार्य श्री बुद्धिसागरसूरिजी
समुदायवर्ती सभी साधु-साध्वीजी म. सा. के
संसारी माता-पिता एवं परिवार के सदस्यों का
महुडी जैन संघ द्वारा सम्मान**

परम पूज्य योग्यनिष्ठ आचार्यदेव श्री बुद्धिसागरसूरिश्वरजी म. सा. के समुदायवर्ती पूज्य साधु-साध्वीजी भगवन्तों के माता-पिता एवं परिवारजनों का सम्मान दिनांक २५ सितम्बर, २०१५ को श्री महुडी (मधुपुरी) श्वेताम्बर मूर्तिपूजक जैन संघ ट्रस्ट द्वारा किया गया. परम पूज्य राष्ट्रसन्त आचार्यदेव श्री पद्मसागरसूरिश्वरजी महाराज साहब के ८१वें जन्मोत्सव के शुभ प्रसंग पर आयोजित यह सम्मान समारोह पूज्य राष्ट्रसन्त के पट्टशिष्य आचार्य श्री वर्धमानसागरसूरिजी म. सा., आचार्य श्री विवेकसागरसूरिजी म. सा., आचार्य श्री अजयसागरसूरिजी म. सा. आदि ठाणा एवं विशाल श्रमणी समूह की पावन निश्रा में सम्पन्न हुआ.

कार्यक्रम में उपस्थित गुरुभगवन्तों ने परम पूज्य योगनिष्ठ आचार्य श्री बुद्धिसागरसूरिजी म. सा. एवं राष्ट्रसन्त आचार्य श्री पद्मसागरसूरिजी म. सा. के गुणों का कीर्तन किया तथा परम उपकारी माता-पिताओं के ऋणों का स्मरण किया गया. माता-पिता के उपकारों की चर्चा करते हुए पूज्यश्री ने कहा कि माता-पिता जन्मदाता हैं, संस्कारदाता हैं तो गुरुभगवन्त सिद्धिमार्ग के दाता हैं. हमारे जीवन में दोनों का समान महत्त्व है. एक ने मन की आँखें दी हैं तो दूसरे ने उजाला दिया है.

सुदूरवर्ती प्रदेशों से पधारे गुरुभक्तों के लिये तीर्थ पर ट्रस्ट मंडल की ओर से आवास एवं भोजनादि की समुचित व्यवस्था की गई थी. सभी कार्यक्रम पूर्ण धार्मिक वातावरण में सम्पन्न हुए.





कैलास श्रुतसागर ग्रंथसूची भाग-१८
तथा धम्मं सरणं पवज्जामि ग्रंथ का
विमोचन करते हुए महानुभाव

गुरु भगवंत को ग्रंथ समर्पित करते हुए
आणंदजी कल्याणजी पेढी के
माननीय प्रमुख शेटश्री संवेगभाई



महानुभावों का बहुमान करते
पूर्व ट्रस्टीश्री कल्पेशभाई शाह

गुरुजी के जन्मदिन प्रसंग पर भक्तजनों
द्वारा रचित विशिष्ट रंगोली



TITLE CODE : GUJ-MUL 00578. SHRUTSAGAR (MONTHLY). POSTAL AT GANDHINAGAR. ON
15TH OF EVERY MONTH. PRICE : RS. 15/- DATE OF PUBLICATION OCT-2015



८१वें जन्मोत्सव प्रसंग पर उपस्थित भक्तजनों को
आशीर्वाद देते हुए पूज्यश्री

प्रकाशक

आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर

श्री महावीर जैन आराधना केंद्र कोबा, गांधीनगर 382009
फोन नं. (079) 23286208, 204, 242, फैक्स (079) 23286289

Website : www.kobatirth.org

email : gyanmandir@kobatirth.org

PRINTED, PUBLISHED AND OWNED BY : SHRI MAHAVIR JAIN ARADHANA KENDRA,

PRINTED AT : NAVPRABHAT PRINTING PRESS, 9-PUNAJI INDUSTRIAL ESTATE,

DHOBHIGAT, DUDHESHWAR, AHMEDABAD-380004 PUBLISHED FROM : SHRI MAHAVIR
JAIN ARADHANA KENDRA, NEW KOBA, TA. & DIST. GANDHINAGAR, PIN : 382007, GUJARAT

EDITOR : HIRENBHAI KISHORBHAI DOSHI